

विशेषक वि. (तत्.) 1. विशिष्ट या भेद को स्पष्ट करने वाला 2. विशिष्टता उत्पन्न करने वाला 3. विशेषता बताने वाला चिह्न, पदार्थ, तत्त्व 4. माथे का तिलक, टीका 5. चंदन आदि से माथे, चेहरे आदि पर अनेक प्रकार की रेखाओं से की गई सजावट 6. संस्कृत में तीन पद्यों, श्लोकों का समूह जिसमें एक ही क्रिया होती है और इस कारण तीनों का एक साथ ही अन्वय होता है काव्य. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः 5 भगण और गुरु (भ भ भ भ भ ग) के योग से 16 वर्ण होते हैं।

विशेषकर क्रि.वि. (तद्.) विशेषकर रूप से, विशेषतः, खास तौर पर।

विशेषज्ञ पुं. (तत्.) किसी विषय का विद्वान, विशेष ज्ञाता।

विशेषण वि. (तत्.) विशेषता बोधक, विशेषता बताने वाला, विशेष्य का गुण या रूप आदि बताने वाला पुं. वह शब्द जो किसी संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बतलाता हो और उसकी स्थिति के साथ अन्य संज्ञाओं से पृथक् करता हो, विशेषण तीन प्रकार के होते हैं (क) गुणवाचक विशेषण जो गुण, काल, स्थान, रूप, रंग, दशा आदि का बोध कराता है (ख) संख्यावाचक विशेषण-संख्या का बोध कराता है (ग) परिमाणबोधक विशेषण जो मात्रा या परिमाण का बोधक हो।

विशेषण-विपर्यय वि. (तत्.) काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें व्यक्ति के विशेषण को उससे संबद्ध वस्तु का विशेषण बना दिया जाता है जैसे-खिलखिलाती चाँदनी, विलाप करती घाटियां।

विशेषतः क्रि.वि. (तत्.) खास तौर पर, विशेषकर।

विशेषता स्त्री. (तत्.) किसी व्यक्ति/वस्तु/भाव में अन्य की तुलना में कोई अच्छी/बुरी बात, विशेषता का गुण, अन्य की तुलना में विशेष होने की अवस्था/ भाव।

विशेषांक वि. (तत्.) किसी पत्रिका का विशेष अंक जिसमें किसी विशेष उत्सव, घटना, स्थान, व्यक्ति आदि से संबंधित सामग्री दी जाती है।

विशेषाधिकार वि. (तत्.) 1. सामान्य अधिकारों से भिन्न विशेष/खास अधिकार 2. किसी व्यक्ति/संस्था को प्राप्त विशेष अधिकार जिस कारण उसे अन्य की तुलना में कुछ अधिक सुविधा/अधिकार मिलता है। privilege

विशेषित वि. (तत्.) 1. परिभाषित, जिसकी परिभाषा की गई हो 2. जिसकी विशिष्ट पहचान बताई गई हो 3. उत्तम, उत्कृष्ट 4. व्याक. विशेषण-युक्त, विशेष्य।

विशेषी वि. (तत्.) विशेषता से युक्त, जिसमें विशेषता या विशिष्टता हो।

विशेषोक्ति स्त्री. (तत्.) विशेष कथन, सामान्य से अधिक कथन काव्य. एक अर्थालंकार जो कारण होते हुए भी कार्य न होने के चमत्कारी वर्णन में होता है।

विशेष्य पुं. (तत्.) व्याक. वह संज्ञावाची शब्द-पद जिसकी विशेषता कोई विशेषण या विशेषण पदबंध सूचित करता है।

विशोक वि. (तत्.) शोकरहित, जिसे शोक न हो, सुखी, संतुष्ट पुं. अशोक वृक्ष।

विशोधन वि. (तत्.) 1. शोधन, शुद्ध करने की क्रिया, स्वच्छ करना 2. प्रायश्चित।

विशोधनीय वि. (तत्.) 1. शुद्ध करने योग्य 2. सुधार/ संशोधन करने योग्य।

विशोधित वि. (तत्.) शुद्ध किया हुआ, मैल/धब्बों आदि से मुक्त या स्वच्छ किया गया।

विशोधी वि. (तत्.) शुद्ध या साफ करने वाला पदार्थ।

विशोध्य वि. (तत्.) शुद्ध/साफ/संशोधन करने योग्य।

विश्रंभ पुं. (तत्.) 1. विश्वास, भरोसा, एतबार 2. रतिकाल में प्रेमी और प्रेमिका में होने वाला झगड़ा 3. प्रेम।

विश्रब्ध वि. (तत्.) 1. शांत 2. विश्वसनीय 3. निर्भय, निडर 4. जो उद्दंड न हो।